

कोई बात प्रकट करने के लिए व्यवहार में "मनसा, वाचा, कर्मणा" इस उक्ति का प्रयोग होता है।

**वाचाघात** पुं. (तत्.) बोलने की शक्ति की हानि, असमर्थता चिकि. जिह्वा पर पक्षाघात के कारण बोलने की शक्ति का क्षय, वाग्हानि।

**वाचाबंध** पुं. (तत्.) वचन का बंधन।

**वाचाबद्ध** वि. (तत्.) वचन से बँधा हुआ, वचनबद्ध, प्रतिज्ञा के वशीभूत।

**वाचाभाव** पुं. (तत्.) वचन की कमी, बोलने की शक्ति हीनता, मूकता, गूंगापन।

**वाचाल** वि. (तत्.) अत्यधिक बोलने वाला, बकवासी या बातूनी, शेखी बघारने वाला, बक बक करने वाला।

**वाचालता** स्त्री. (तत्.) वाचाल होने का भाव या क्रिया, बकवासी।

**वाचिक** वि. (तत्.) बोलने से संबंधित, वाचनिक।

**वाची** वि. (तत्.) जो वाणी से संबंधित हो, वचन के रूप में होने वाला टि. वाची शब्द समासांत पद के अंत में लगाने वाला, जिसका अर्थ 'बोध कराने वाला' होता है।

**वाच्** पुं. (तत्.) बोलना, कहना, 'वाचन' का मूल शब्द।

**वाच्य** वि. (तत्.) कथन योग्य, शब्द द्वारा बोधगम्य, बोधगम्य अर्थ (वाच्य शब्द द्वारा व्यक्त अर्थ वाच्यार्थ होता है) टि. व्याकरण में वाच्य के तीन भेद हैं-कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य, वाच्य का संबंध क्रिया से होता है।

**वाच्यार्थ** पुं. (तत्.) वाचक या अभिधेय शब्द का अर्थ।

**वाच्यावाच्य** पुं. (तत्.) जो बात कथन योग्य हो और कथन योग्य नहीं हो।

**वाजंत्र** पुं. (तत्.) (वाद्य यंत्र) अनेक प्रकार के वाद्य यंत्र या बाजे।

**वाजपेई/वाजपेयी** पुं. (तत्.) 1. वाजपेय नामक एक प्रशस्त यज्ञ जो करे, वह वाजपेयी के नाम से जाना जाता है टि. 'वाजपेय', यज्ञ (सात प्रकार के सोम यज्ञों में से एक है जो सर्वोच्च पद के अभिलाषी राजा या ब्राह्मण द्वारा राजसूय यज्ञ के पूर्व किया जाता है) 2. ब्राह्मण जाति की एक उपाधि।

**वाजपेय** पुं. (तत्.) सोमरस पेय जो श्रौत यज्ञ में उपयोग होता है।

**वाजसनेय** पुं. (तत्.) 1. शुक्ल यजुर्वेद 2. याज्ञवल्क्य ऋषि का उपनाम।

**वाजिनी** स्त्री. (तत्.) अश्व, घोड़ी।

**वाजिव** वि. (अर.) उपयुक्त, उचित, जरूरी, आवश्यक।

**वाजिमेध** पुं. (तत्.) अश्वमेध यज्ञ।

**वाजिब** वि. (तत्.) उपयुक्त, उचित, जरूरी, आवश्यक।

**वाजिशाला** स्त्री. (तत्.) घोड़ों की शाला या घोड़े बाँधने की जगह, अस्तबल, अश्वशाला।

**वाजी** पुं. (तत्.) घोड़ा, अश्व।

**वाजीकर** वि. (तत्.) 1. काम शक्ति को बढ़ाने वाला 2. मनुष्य का कामोद्दीपक।

**वाजीकरण** पुं. (तत्.) औषध विशेष द्वारा कामशक्ति का उद्दीपन।

**वाजीकर द्रव्य** पुं. (तत्.) कामोद्दीपन करने वाला पदार्थ, पौरुषशक्ति को बढ़ाने वाला तत्त्व।

**वाञ्छन/वांछन** पुं. (तत्.) चाह, इच्छा, वाञ्छा।

**वाट** पुं. (अं.) 1. चारदीवारी, पथ, मार्ग, रास्ता, घिरा हुआ स्थान, अहाता 2. बगीचा, उद्यान 3. कटि प्रदेश, कमर अं. बिजली की शक्ति की एक मात्रा।

**वाटरकलर** पुं. (अं.) पानी मिलाकर प्रयोग किए जाने वाले रंग।